''परमेश्वर प्रेम है''

एच. ए. डिक्सन

सामरी स्त्री के पास, यीशु ने घोषणा की कि ''परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके भजन करने वाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें'' (यूहन्ना 4:24)। अपने इस कथन में मसीह ने इस बात की पुष्टि की कि परमेश्वर एक व्यक्ति है। वह आत्मा है अर्थात एक वास्तविक जीव है, परन्तु पूरी तरह से निराकार है। वह आत्मा है अर्थात, उसके बारे में कुछ भी स्पर्श योग्य नहीं है। उसे छुआ नहीं जा सकता और न ही उसे इन शारीरिक आंखों से देखा जा सकता है। वह आत्मा है, परन्तु वास्तविक है। वह एक व्यक्तिगत परमेश्वर है।

1 यूहन्ना 1:5 में प्रेरित यूहन्ना ने कहा है कि ''परमेश्वर ज्योति है: और उसमें कुछ भी अन्धकार नहीं''। पवित्र आत्मा से प्रेरणा पाए इस लेखक ने इस बात की पुष्टि की है कि परमेश्वर एक बुद्धिमान जीव है। *वह प्रकाश नहीं बल्कि ज्योति है।* उसका स्वभाव ही ज्योति है। बौद्धिक पक्ष से यह ईश्वरीय सार है। ज्योति परमेश्वर का गुण नहीं, बल्कि स्वयं परमेश्वर है। याकूब ने यह स्पष्ट करते हुए ऐलान किया कि परमेश्वर ''ज्योतियों का पिता'' है (याकूब 1:17)। पौलुस ने कहा कि वह ज्योति में रहता है (1 तीमुथियुस 6:16)।

1 यूहन्ना 4:8 में हमें परमेश्वर के स्वभाव सम्बन्धी एक गहरा कथन मिलता है: ''जो प्रेम नहीं रखता, वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है''। ज्योति की तरह ही, प्रेम परमेश्वर का केवल गुण ही नहीं बल्कि उसका स्वभाव भी है। जिस प्रकार ''परमेश्वर ज्योति है'' की अभिव्यक्ति से परमेश्वर का बौद्धिक स्वभाव संक्षिप्त हो जाता है, उसी प्रकार ''परमेश्वर प्रेम है'' भी उसके नैतिक स्वभाव को संक्षेप में बताता है। जो कोई सुन्दरता, सामर्थ और न्याय के परमेश्वर के गुणों का ध्यान नहीं करता है उसने परमेश्वर के ज्ञान को सीमित कर दिया है, चाहे उसे उसके बारे में बहुत सी बातों का ज्ञान क्यों न हो। उसी प्रकार, जिसे प्रेम की अवधारणा का ज्ञान नहीं है, वह परमेश्वर को जान ही नहीं सकता। प्रेम परमेश्वर का है, क्योंकि वह प्रेम है। फिर तो, परमेश्वर आत्मा है, अर्थात एक व्यक्तिगत जीव; वह ज्योति, अर्थात एक बौद्धिक जीव है; और वह प्रेम अर्थात एक नैतिक जीव है।

यूहन्ना ने मसीही लोगों के नाम लिखी अपनी पहली पत्री में एक दूसरे के व्यवहारों के सम्बन्ध में पाई जाने वाली गलत धारणाओं को सुधारने के लिए, थोड़ा सा लिखा था। इस पुस्तक का एक उद्देश्य भाईचारे के प्रेम का महत्व बताना है। 1 यूहन्ना 4:7, 8 में हम पढ़ते हैं, ''हे प्रियो, हम आपस में प्रेम रखें; क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है: और जो कोई प्रेम करता है, वह परमेश्वर से जन्मा है; और परमेश्वर को जानता है। जो प्रेम नहीं रखता, वह

परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है'' ।

एक दूसरे से प्रेम की बात मसीही लोगों से इस प्रकार जुड़ी हुई है कि किसी के परमेश्वर की संतान होने का यही प्रमाण है कि वहां प्रेम है। ''जो कोई प्रेम रखता है, वह परमेश्वर से जन्मा है; और परमेश्वर को जानता है।'' बिना प्रेम के, परमेश्वर का पुत्र होने का दावा नहीं किया जा सकता। जैसे एक बच्चे में अपने सांसारिक पिता का स्वभाव होता है, उसी प्रकार परमेश्वर की आत्मिक संतान में अपने आत्मिक पिता का स्वभाव होता है। पिता प्रेम है, और जो कोई उसका होने का दावा करता है उसके लिए आवश्यक है कि वह उस प्रेम में सहभागी हो। प्रेम वैसे ही उसके जीवन का एक भाग होना चाहिए जैसे यह परमेश्वर का एक भाग है।

परमेश्वर का प्रेम मनुष्य को दिखाया गया

मनुष्य का दिमाग़ परमेश्वर को पूरी तरह समझने में असफल रहा है। उसकी आंखें परमेश्वर को देख नहीं सकतीं। उसके हाथ परमेश्वर को छू नहीं सकते। उसका दिमाग़ परमेश्वर की खोज नहीं कर सकता। परमेश्वर ने मनुष्य में अपना स्वभाव तथा अपने गुण प्रकट कर दिए हैं, फिर भी उनमें से एक को भी नाशवान मनुष्य की कलम या शब्दों से समझाया नहीं जा सकता। इस तथ्य से प्रभावित होकर, एक कवि ने कुछ पंक्तियां लिखीं थीं। उनका अनुवाद इस प्रकार से है:

अगर हम स्याही से सागर को भर देते,
घास की हर एक पत्ती कलम बन जाती,
संसार चर्मपत्र बन जाता,
और हर मनुष्य लेखक,
तौभी परमेश्वर के प्रेम को लिखते-लिखते,
जो सबसे ऊपर है
सागर सूख जाता;
एक आकाश से दूसरे आकाश तक फैलाने
के बाद भी उस पत्री में
वह पूरा न समा पाता।[1]

नाशवान मनुष्य अनादि परमेश्वर के दिमाग़ और चरित्र को नहीं पा सकता है। फिर तो, मनुष्य को परमेश्वर की वास्तविकता तथा स्वभाव को जानने के लिए उसके ईश्वरीय प्रदर्शनों पर ही निर्भर होना पड़ेगा। बिल्कुल सही, हम पौलुस से सहमत होकर कह सकते हैं कि ''उसके अनदेखे गुण, अर्थात उसकी सनातन सामर्थ, और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं ...'' (रोमियों 1:20)। इस कथन में परमेश्वर की ईश्वरीयता तथा सामर्थ की बात है, परन्तु उसके प्रेम के सम्बन्ध में भी यही सत्य है। हम उसके प्रेम को देख तो नहीं सकते, परन्तु ईश्वरीय करुणा, दया और मनुष्य पर

उसके अनुग्रह के कामों से इसे समझ सकते हैं।

परमेश्वर ने मनुष्य के प्रति अपने प्रेम को सृष्टि के समस्त कार्य में दिखाया है। यशायाह नबी ने कहा था कि परमेश्वर ने मनुष्य को बसने के लिए रचा है (यशायाह 45:18)। इसका अर्थ सही ही निकाला गया है कि परमेश्वर ने आरम्भ में संसार को मनुष्य के निवास के लिए बनाया, जिससे वह प्रेम करता था। परमेश्वर मनुष्य के पास आता था, जिसे उसने स्वर्गदूतों से थोड़ा कम बनाया था (इब्रानियों 2:6, 7)।

इस निवास में, उस प्रेमी परमेश्वर ने न केवल आदमी के अस्तित्व के लिए जीवन की सभी मूलभूत वस्तुएं ही उपलब्ध करवाईं, बल्कि उसने उसके लिए एक सहायक भी बनाई जो उसकी आवश्यकताओं के अनुसार उपयुक्त थी। उसने आदमी को इस सहयोगी के साथ इतने पक्के बन्धन में बांध दिया, जिसे लोग पुरुष के लिए अपनी पत्नी का प्रेम कहते हैं। इस नए बन्धन से आदमी को अपने प्रियजनों के साथ एक घर मिला, और इससे युगों तक सच्चे प्रेम को बढ़ाने और कायम रखने का आधार मिला। मनुष्य के पास परमेश्वर की सच्ची संतान के घर को भरने से अच्छे प्रेम की परिभाषा नहीं है।

परमेश्वर का प्रेम भौतिक संसार की रचना में दिखाई देता है। उसने मनुष्य को आदर्श परिस्थितियों में अदन की वाटिका में रखा। मनुष्य द्वारा पाप करने और उसे वाटिका से निकालने के बाद भी, परमेश्वर ने मनुष्य के प्रति अपना प्रेम दिखाया। बेशक पृथ्वी श्रापित हो चुकी थी और मनुष्य मेहनत-मजदूरी करने को मजबूर था, परन्तु परमेश्वर ने अनुकूल मौसम दिए और उसे समय के अन्त तक बीज बोने तथा उपज लेने का आश्वासन मिला।

समस्याओं की इस दुनिया में, मनुष्य को रास्ता कभी भी अकेले नहीं मिल सकता। समस्याओं के समाधान उसे अपने आप नहीं मिलते। पुन:, परमेश्वर ने मनुष्य को निर्देश देकर अपने प्रेम को दिखाया। परमेश्वर ने अपने आपको अलग-अलग संदेशवाहकों के द्वारा प्रकट किया। उसने अन्धेरे को छितराने के लिए ज्योति और मनुष्य की अगुआई के लिए परामर्श दिया। वह परामर्श और निर्देश मिलकर ''पुस्तकों की पुस्तक'' बन जाते हैं। बाइबल स्वयं इस तथ्य का प्रमाण है कि परमेश्वर प्रेम है।

प्रेम होने का परमेश्वर का सबसे बड़ा प्रमाण इन तथ्यों से मिलता है कि उसने मनुष्य के पापों के लिए उपाय उपलब्ध करवाया है। यूहन्ना 3:16 बाइबल की ''सुनहरी आयत'' के रूप में प्रसिद्ध है। यह बिल्कुल सही है, क्योंकि यह पद परमेश्वर के प्रेम की सीमा का सार है। उसने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि हमारे स्थान पर मरने के लिए अपने पुत्र को दे दिया। यूहन्ना ने कहा है, ''हमने प्रेम इसी से जाना, कि उसने हमारे लिए अपने प्राण दे दिए'' (1 यूहन्ना 3:16क)। कलवरी के क्रूस पर ही हमें मनुष्य जाति के लिए परमेश्वर के प्रेम का हर कोना स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इसमें हमारे प्राणों के लिए उसकी चिन्ता की लम्बाई, चौड़ाई, ऊंचाई और गहराई दिखाई देती है।

पृथ्वी पर परमेश्वर के परिवार की संगति व आनन्द परमेश्वर के प्रेम का एक और प्रगटीकरण है। यह संगति उन सब लोगों का सौभाग्य है जो परमेश्वर की कलीसिया बनते हैं। इसमें उसके लोग उसकी सभी आशिषें पाते हैं। उसने कलीसिया से प्रेम किया और इसे

सम्भव बनाने के लिए अपने पुत्र को दे दिया। उस पुत्र ने कलीसिया से प्रेम किया और अपने आपको दे दिया ताकि परमेश्वर की आत्मा के निवास के लिए वह इसे पवित्र तथा शुद्ध बना सके।

परमेश्वर के प्रेम के अन्तिम प्रतीक के रूप में हम मृत्यु के बाद जीवन की आशा की ओर ध्यान दिलाते हैं। यह बात एक प्रेमी पिता की प्रतिज्ञाओं के द्वारा मनुष्य में डाली गई थी, और मनुष्य को धर्मी जीवन बिताने के लिए प्रेरणा देती है। यह विश्वास कि जीवन अनन्तकाल की ओर केवल एक कदम है, अनन्त महिमा के स्वर्गलोक जाने की इस आशा से देह या मन के कष्टों को सहने तथा जीवन की कठिन परीक्षाओं का सामना करने की सामर्थ मिलती है। यह आशा इस तथ्य का एक और प्रगटावा है कि परमेश्वर ने अपने प्रेम से जीवन तथा भक्ति से सम्बन्ध रखने वाली सभी आशिषें उपलब्ध करवा दी हैं।

परमेश्वर के प्रेम को मनुष्य द्वारा ग्रहण करना

परमेश्वर ने अपने प्रेम को मनुष्य द्वारा उसे ग्रहण करने के लिए उसकी ओर उंडेला है। यूहन्ना ने कहा है, ''हम इसलिए प्रेम करते हैं, कि पहले उसने हमसे प्रेम किया'' (1 यूहन्ना 4:19)। परमेश्वर से प्रेम करने के लिए, आवश्यक है कि उनसे भी प्रेम करें जो उसे प्रेम करते हैं; लोगों में यह गलतफ़हमी पाई जाती है कि परमेश्वर के लोगों के प्रति दुर्भावना और शत्रुता रखकर हम परमेश्वर से प्रेम कर सकते हैं। पौलुस प्रेरित की भाषा में, हर एक मसीही को ''एक दूसरे को अपने से अच्छा'' (फिलिप्पियों 2:3) समझकर परमेश्वर के लोगों के प्रति अपना प्रेम दिखाना चाहिए।

प्रेम का सेवा में बदलना आवश्यक है। परमेश्वर की नज़र में प्रेम से कार्य करने वाला विश्वास ही सच्चा विश्वास है। यीशु ने कहा था, ''यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे'' (यूहन्ना 14:15)। इसलिए प्रेम को सेवा से अलग नहीं किया जा सकता और परमेश्वर के लोगों के लिए प्रेम को सेवा द्वारा ही दिखाया जाना चाहिए। हमें लोगों की सेवा करते हुए उनकी आत्माओं से प्रेम के कारण उनके उद्धार की खोज में लगे रहना चाहिए। लोगों की भौतिक आवश्यकताओं से अपने कान और आंखें बंद करके हम उन्हें आत्मिक भोजन नहीं दे सकते। यीशु भलाई करता गया, और जो लोग वैसा ही प्रेम रखते हैं जैसा यीशु का था, उनके लिए उसके उदाहरण का अनुसरण करना आवश्यक है।

परमेश्वर के प्रेम के चरित्र तथा गुण को 1 कुरिन्थियों 13 के प्रसिद्ध शब्दों में डाला गया है। परमेश्वर का दास घोषणा करते हुए यह कहता है कि:

> प्रेम धीरजवन्त है, और कृपाल है; प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता और फूलता नहीं। वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता। कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है। वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है (1 कुरिन्थियों 13:4-7)।

यह पद न केवल प्रेम के चरित्र को दर्शाता है, बल्कि परमेश्वर का भी चित्रण करता है क्योंकि परमेश्वर प्रेम है। ''प्रेम'' के स्थान पर ''परमेश्वर'' शब्द लगा देने पर यह पद काफी पढ़ने योग्य अर्थात अच्छा लगता है:

> परमेश्वर धीरजवन्त है, और कृपाल है; परमेश्वर डाह नहीं करता; परमेश्वर अपनी बड़ाई नहीं करता और फूलता नहीं। वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता। कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है। वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है।

परमेश्वर के बालक का स्वभाव तथा चरित्र परमेश्वर जैसा ही होना चाहिए, इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि पवित्र शास्त्र के इस पद में उसमें अपना नाम रखने का गुण होना चाहिए। आइए फिर से इस पद को इस प्रकार पढ़ते हैं:

> मसीही धीरजवन्त है, और कृपाल है; मसीही डाह नहीं करता; मसीही अपनी बड़ाई नहीं करता और फूलता नहीं। वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता। कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है। वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है।

अन्त में, आइए हम सब अपने आपको वहां रखें और एक बार फिर पढ़ें:

> मैं धीरजवन्त हूं, और कृपाल हूं; मैं डाह नहीं करता; मैं अपनी बड़ाई नहीं करता और फूलता नहीं। मैं अनरीति नहीं चलता, मैं अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता। कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता हूं। मैं सब बातें सह लेता हूं, सब बातों की प्रतीति करता हूं, सब बातों की आशा रखता हूं, सब बातों में धीरज धरता हूं।

किसी भी मनुष्य में पूरी तरह से अपने तौर पर ऐसा दावा करने का साहस नहीं होगा, परन्तु यही तो चेले होने की वास्तविक परीक्षा है। क्या हम वास्तव में परमेश्वर को जानते हैं? क्या हम कह सकते हैं कि हम में परमेश्वर का स्वभाव है? उत्तर देते हुए, आइए फिर से याद करें कि उसने कहा है कि ''जो प्रेम नहीं रखता, वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है'' (1 यूहन्ना 4:8); ''यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे, कि तुम मेरे चेले हो'' (यूहन्ना 13:35)।

पौलुस द्वारा दी गई प्रेम की परिभाषा पर मनन करने पर, हमें मनुष्य के स्वार्थी स्वभाव का ध्यान आता है। हम उसके आत्मनिर्भर होने के विचार में डूबने का स्मरण करते हैं। हम याद करते हैं कि दूसरों की आलोचना करने और अपने आपको धर्मी बताने की ओर उसका

कितना ध्यान रहता है। हम याद करते हैं कि कैसे उसे अपने भाई की आंख का तिनका तो दिखता है, परन्तु अपनी आंख का लट्ठा दिखाई नहीं देता (देखिए मत्ती 7:3, 4)।

क्या हम इस तथ्य को स्पष्ट करने में असफल रहे हैं कि बिना प्रेम के कोई भी सद्गुण परमेश्वर के गुण के बराबर नहीं हो सकता? जिस समय परमेश्वर के लोगों को विशेष आश्चर्यकर्म करने की शक्तियां दी जाती थीं, तब भी प्रेम का अभाव होने पर उन कामों को उसकी नज़र में व्यर्थ गिना गया था (1 कुरिन्थियों 13:1, 2)। उन दानों से परमेश्वर का उद्देश्य पूरा हुआ और उद्देश्य पूरा होने के बाद उन्हें बीच में से उठा लिया गया; अब केवल विश्वास, आशा और प्रेम ही रहते हैं। पौलुस कहता है कि ''इन में से बड़ा प्रेम है'' (1 कुरिन्थियों 13:13)। यह वह गुण है जो किसी के विश्वास तथा आशा को अर्थ और महत्व देता है। इस गुण के होने से हमें पता चलता है कि हम परमेश्वर के हैं या नहीं। इससे हम जानते हैं कि हम सचमुच परमेश्वर की संतान हैं या नहीं। इससे हम जानते हैं कि इस पृथ्वी से जाने के बाद उसकी उपस्थिति में जाने पर हम उसके जैसे होंगे या नहीं।

पाद टिप्पणियां

[1]फ्रेडरिक मार्टिन लेहमैन, *''द लव ऑफ़ गॉड'' सौंग्ज़ ऑफ़ फ़ेथ एण्ड प्रेज़,* comp. and ed. ऐल्टन एच. हावर्ड (वेस्ट मोनरो, La.: हावर्ड पब्लिशिंग कं., 1996)।

यह पाठ *अबिलेन क्रिश्चियन कॉलेज लैक्चर्ज़,* 1958 से लेकर मुद्रित किया गया है। अबिलेन क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी लैक्चरशिप के निर्देशक की अनुमति से छापा गया।